शिक्षण (TEACHING)

Concept :-
शिक्षण शिक्षा की प्रमुख अंग है इसके बिना व्यक्ति नवीन ज्ञान अर्जित करने में सफल और सक्षम होता है शिक्षण प्रक्रिया का संचालन और उसकी संवेदनाओं से होता है पहले शिक्षण का अर्थ यह समझा जाता था कि थोड़ा से ज्ञान बालक को लिखने-पढ़ने और गणित में दे दिया जाय तो यह ज्ञान अध्यापन बालक की स्मृति पर ही बल देकर प्रदान करते थे। जो शिक्षण विधि वे अपनाते थे, वह रटन की विधि थी। वे बालक पर शिक्षा देना उचित समझते थे। शिक्षण एक सामाजिक प्रक्रिया है। अतः ~~प्रत्येक देश~~ इसमें प्रत्येक देश की शासन पद्धति, सामाजिक दर्शन, सामाजिक परिस्थितियाँ तथा मूल्यों आदि का प्रभाव पड़ता है जिस देश में जैसी शासन प्रणाली या सामाजिक दार्शनिक परिस्थितियाँ होगी, वहाँ उसी तरह का शिक्षण प्रक्रिया होगी। विभिन्न दर्शन, सांस्कृतिक तथा देश की सामाजिक स्वरुप के आधार पर शिक्षण के अर्थ को तीन भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

① एक तंत्र में शिक्षण का अर्थ।
② लोकतंत्र में शिक्षण का अर्थ।
③ हस्तक्षेप रहित शासन में शिक्षण कार्य।

** शिक्षण की आधुनिक अवधारणा :-

19 वी शताब्दी के प्रारंभ से। यह स्पष्ट रुप से माना जाने लगा कि शिक्षण प्रदान करने में बालक का विशेष महत्व है — रुसो, पेस्टालॉजी, फ्रोबेल, हर्बिल स्पेंसर, जान, डी०वी० आदि के विचारों में प्राचीन शिक्षण सिद्धान्तो एवम् विधियो में क्रान्ति उत्पन्न कर दिया। शिक्षा विषय केन्द्रित से हटकर बाल केन्द्रित होने लगा। विभिन्न बालको की योग्यता, रुचि आदि के अनुसार शिक्षा प्रदान करना उचित समझा जाने लगा। इस प्रकार शिक्षाशास्त्रीयो ने शिक्षा में नवीन सिद्धान्तों का प्रतिपादन की और नवीन शिक्षा पद्धतियों का विस्तार किया। उन्होने इस बात पर बल दिया की शिक्षा एक आनन्दपूर्ण प्रक्रिया है और बालक, नई वस्तुओ को सीखने में आनन्द करता है।

इस प्रकार शिक्षण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति को अपने परिवार, मित्रता, मनोरंजन और व्यवसाय से अपने वातावरण से अनुकूल करने के लिए आजीवन शिक्षण प्राप्त करता है।

* शिक्षण की परिभाषा :-

शब्दकोश के द्वारा → "शब्दकोश और मनोविज्ञान दूसरे को सीखने में मदद करने की प्रक्रिया को शिक्षण कहते है।

⇒ ~~www~~ वल्ड बुक इनसाइक्लोपिडिया के अनुसार — "शिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को ज्ञान, कौशल तथा अभिरुचियों को सीखने या प्राप्त करने में सहायता देता है।

⇒ The Little of Oxford Dictionary के अनुसार — "ज्ञान कौशल का विकास करना, अनुदेशन देना, पाठ पढ़ाना तथा उन्हें उत्साहित करना शिक्षण का उद्देश्य है।

⇒ सिम्पसन के अनुसार — " शिक्षण का तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा समुह के लोग अधिगम करते है। "

⇒ गेज के अनुसार — " शिक्षण एक प्रकार का पारस्परिक प्रभाव है जिसका उद्देश्य है, दूसरे व्यक्ति के व्यवहारों में वांछित परिवर्तन लाना ॥ "

⇒ रायन्स के अनुसार — " दूसरो को सीखने के लिए दिशा निर्देश देने तथा अन्य प्रकार से उन्हें निर्देशित करने की प्रक्रिया को शिक्षण कहा जाता है। "

⇒ क्लार्क के अनुसार — " शिक्षण वह प्रक्रिया है जिसके प्रारुप तथा संचालन की व्याख्या इसलिए की जाती है जिससे छात्रों की व्यवहारों में परिवर्तन की जाती है।

उपरोक्त परिभाषाओं से निम्नलिखित तथ्य सामने आते है। इस प्रकार शिक्षण एक सामान्य विचार की व्याख्या करता है।

⇒ यह एक सामाजिक प्रक्रिया है।

⇒ यह मानव प्रकृति पर आधारित है।

⇒ यह उद्देश्यपूर्ण और वर्णात्मक क्रिया है।

⇒ इसके तीन पक्ष होते हैं, शिक्षक, शिक्षार्थी, पाठ्यक्रम।

⇒ इसकी अपनी नीति शिक्षण शैली होती है और ये अनेक विधियो द्वारा संचालित होती है।

⇒ शिक्षण की प्रकृति :—

शिक्षण स्वयं में एकांकी प्रक्रिया है, इसको पूर्णता: मिलती है तब, जब उसके साथ अधिगम जुड़ जाता है। इस प्रकार अधिगम शिक्षण के साथ-साथ चलता है, अध्यापक शिक्षणकर्ता, छात्र अधिगम करते है। पिछले दशक में शिक्षण एकांकी प्रक्रिया के रुप मे ही माना जा रहा था, परन्तु - मनोवैज्ञानिक शोधो ने प्राचीन धारणा को खण्डित करके नवीन धारणा विकसित की है।

शिक्षण, कक्षा मे एक कोने में छात्रो के सम्मुख खड़े होकर किसी बात या तथ्य को समझा देना मात्र नहीं है। शिक्षा पाठ्यपुस्तक पढ़कर सुना देना भी नहीं है

यह तो मानव ~~क्षम~~ मन की संवेदनाओं से प्रभावी राष्ट्रव्यापी उद्देश्य की पूर्ति हेतु व्यक्तित्व विकास का सम्बल लेकर विद्यालय तथा कक्षागत परिस्थितियों में सम्पन्न होने वाली प्रक्रिया है।

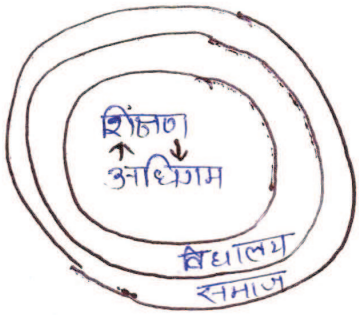

चित्र :- शिक्षण, समाज तथा स्कूल।

शिक्षण का कार्य :-

शिक्षण का कार्य अतिविस्तृत एवम् जटील है जहाँ कहीं भी छात्रों के अधिगम को ~~प्रणाली का निर्माण किया जाता है वहाँ शिक्षण का कार्य~~ अभिप्रेरित एवम् संचालित करने के लिए किसी व्यवस्था या प्रणाली का निर्माण किया जाता है। वहाँ शिक्षण का कार्य होता है। शिक्षण के कार्यों को समझने के लिए हम इन्हें निम्नलिखित तीन वर्गों में विभाजित कर सकते है।

① कक्षा से संबंधित शिक्षण कार्य या कक्षागत कार्य।
② कक्षा के बाहर चलने वाला शिक्षण कार्य या कक्षेतर।
③ उपयुक्त दोनो प्रकार के शिक्षण कार्यों से संबंधित शिक्षण कार्य या समान्य कार्य।

① कक्षा से संबधित शिक्षण कार्य या कक्षागत कार्य :-

⇒ कक्षा को संगठित एवम् व्यवस्थित करना।
⇒ छात्रों को अधिगम की समस्याओं का निदान करना।
⇒ छात्रो के व्यक्तिक बिभिन्ताओं की जानकारी प्राप्त करना तथा उनकी प्रारंभिक व्यवहार को समझना।
⇒ शिक्षण की योजना एवम् प्राविधियो का निर्माण एवम् चयन करना।
⇒ सुनिश्चित विधियों के सहारे सुनिश्चित शिक्षण उद्देश्यों के लिए सुनिश्चित पाठ्यक्रम को प्रस्तुत करना।
⇒ विकास समप्रत्यय एवम् समस्याओ को स्पष्ट करना।
⇒ मुल्यांकन करना।

② कक्षा के बाहर चलने वाला शिक्षण कार्य या कक्षेतर कार्य :-

⇒ कक्षेतर कार्यो के लिए छात्रो के समूह को संगठित एवं व्यवस्थित करना।
⇒ छात्रों व्यक्तिक विभिन्नताओ के अनुरुप विभिन्न कक्षेतर कार्यों का चयन एवम् निरीक्षण करना।

⇒ विभिन्न विद्यालयी कार्यक्रमों की योजना एवम् रूप रेखा तैयार करना।

⇒ योजना एवम् रुप-रेखा के अनुरुप छात्रों के विभिन्न क्रिया-कलापों का शिक्षण एवम् प्रशिक्षण देना।

⇒ छात्रों के क्रिया-कलापों में समुचित सुधार एवम् विकास लाने के लिए शिक्षण एवम् प्रशिक्षण में समुचित परिवर्तन करना।

⇒ विभिन्न क्रिया-कलापों से सम्बन्धित कौशलों एवम् कार्यों से सिद्ध हस्त होने के लिए स्वतंत्र अनुभव एवम् प्रयास का अवसर प्रदान करना।

⇒ अपेक्षित सुधार के लिए आवश्यक निर्देशन प्रदान करना जिससे छात्र संबंधित कौशल या कार्य से सिद्ध हस्त हो सके।

⇒ मुल्यांकन करना।

* शिक्षण का समान कार्य :—

शिक्षण का कार्य निम्नलिखित है —

⇒ छात्रों के कार्य को प्रारंभिक रुप से चला देना निर्देशित कक्षा एवम् उसकी व्यवस्था करना।

⇒ कक्षागत एवम् कक्षेतर कार्यों के लिए छात्रों को एकता के सूत्र में बाँधना

⇒ छात्रों को सुरक्षा प्रदान करना।

⇒ छात्रों के लिए पाठ्यचर्या, पाठ्य एवम् प्रशिक्षण सामाग्री का निर्माण करना।

⇒ शिक्षण एवम् प्रशिक्षण के कार्य में सुधार एवम् नवीनता लाने के लिए इस क्षेत्र में हुए अनुसंधानों एवम् प्रकाशित नवीन साहित्य सतत सम्पर्क रखना।

* उत्तम शिक्षण की विशेषताएँ :—

जो शिक्षण विद्यार्थीयों के अधिगम को सुगम बनाता है और प्रभावकारी होता है उसे सफल शिक्षण या उत्तम शिक्षण की संज्ञा दी जाती है। उत्तम शिक्षण का सम्प्रत्यय जीवन के उद्देश्यों और मुल्यों से जुड़ा होता है सफल शिक्षण का सम्बन्ध सदैव उद्देश्य से होता है जिसके आधार पर शिक्षण को सफल या असफल कहा जाता है। इसकी विशेषताएँ निम्न है :—

(i) उत्तम शिक्षण में वांछनीय सूचनाएँ देना सम्मिलत है।

(ii) उत्तम शिक्षण अधिगम में मार्गदर्शन।

(iii) उत्तम शिक्षण बालक में निहित गुणों का विकास करता है (आत्मविश्वास सहयोग)

(iv) उत्तम शिक्षण बालक में सदैव अभिप्रेरणा और पुनर्बलन प्रदान करता है।

(v) उत्तम शिक्षण अनुदेशात्मक होता है।

(vi) उत्तम शिक्षण सदैव छात्रों के पुर्वानुभव पर आधारित है।

(VII) उत्तम शिक्षण सीखाना है।
(VIII) उत्तम शिक्षण क्रियाशील रहने का अवसर प्रदान करता है।
(IX) उत्तम शिक्षण चुनी हुई बातों का ज्ञान होता है।
(X) उत्तम शिक्षण सहयोग पर आधारित होता है।
(XI) उत्तम शिक्षण प्रगतिशील होता है।
(XII) उत्तम शिक्षण छात्रों को वातावरण से अनुकूल रहने में सहायक होता है।
(XIII) उत्तम शिक्षण में शिक्षक दार्शनिक, निर्देशक तथा मित्र के रूप में होता है।
(XIV) उपरोक्त दोनो प्रकार के शिक्षण कार्यों से सम्बन्धित शिक्षण कार्य था समान कार्य।

* एक उत्तम शिक्षक को उत्तम शिक्षण के लिए शिक्षा मनोविज्ञान की आवश्यकता।

वर्तमान काल में शिक्षा की अवधारणा बदल गई है। आज की शिक्षा की उद्देश्य मात्र बच्चों को सूचना देना ही नहीं बल्कि उनका सर्वांगिण विकास करना है। और यह तभी सम्भव है जब शिक्षक को बालक के विषय में पूर्ण ज्ञान है शिक्षा मनोविज्ञान बालक को समझने में शिक्षक की सहायता है क्योंकि शिक्षा मनोविज्ञान में शिक्षण कार्य को सफल और सुखद लाभकारी बनाने के लिए शिक्षामनोविज्ञान के सिद्धान्तो का प्रयोग एक शिक्षक के लिए अति आवश्यक है।

इस प्रकार एक शिक्षक के लिए शिक्षा मनोविज्ञान की आवश्यकताएँ निम्न प्रकार से है —

(1) स्वयं और ज्ञान की तैयारी।
(2) बाल विकास का ज्ञान प्राप्त करने के लिए।
(3) बालक की आवश्यकताओं का ज्ञान।
(4) बालको की मूल प्रवृतियो का ज्ञान।
(5) बालको में व्यक्तिगत विभिन्नता का ज्ञान।
(6) बालको को चरित्र के निर्माण के लिए।
(7) मूल्यांकन की उचित विधियों का प्रयोग।
(8) कक्षा की समस्याओं का समाधान।
(9) उपयोगी पाठ्यक्रम निर्माण में सहायक।

* एक उत्तम शिक्षण के लिए शिक्षा मनोविज्ञान की विधियाँ :—

शिक्षक को उत्तम शिक्षण कराने के लिए शिक्षा मनोविज्ञान एवम् शिक्षाशास्त्र की वृहत शाखा है। इसे भी ज्ञान की संज्ञा प्रदान की गई है। क्योंकि इसके अध्ययन के लिए जिन विधियों का प्रयोग किया जाता है उनमें वैज्ञानिक नियमों का पालन किया जाता है किसी भी विषय को विज्ञान का दर्जा प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि उनमें वैधता, विश्वसनियता, वस्तुनिष्ठ एवं निःपक्षता आदि का गुण हो और शिक्षा मनोविज्ञान के अध्ययन के लिए प्रयुक्त आधुनिक विधियों में ऐसा है।

इस प्रकार उत्तम शिक्षण कराने के लिए शिक्षक को निम्नलिखित विधियों पर ध्यान देना होगा।

(A) आत्मनिष्ठ विधियाँ :—

इस विधि के अन्तर्गत व्यक्ति स्वयं अपने व्यवहार की व्याख्या और विश्लेषण करता है।

जैसे – (1) अन्तर्दर्शन विधि
(11) गाथा वर्णन विधि

(B) वस्तुनिष्ठ विधियाँ —

वस्तुनिष्ठ विधियाँ कई प्रकार की होती है जैसे –

(1) प्रयोगात्मक विधि
(2) वस्तुनिष्ठ प्रश्न
(3) विकासात्मक विधि
(4) उपचारात्मक विधि
(5) सांख्यिकी विधि
(6) तुलनात्मक विधि
(7) मनोविश्लेषण विधि
(8) साक्षात्कार विधि
(9) प्रश्नावली विधि
(10) कीर्ति विधि
(11) व्यक्तिगत इतिहास विधि

(A) आत्मनिष्ठ विधियाँ :—

(1) अन्तर्दर्शन विधि :—

अन्तर्दर्शन का अर्थ है 'To Look Within' (स्वयं के अन्दर देखना) अर्थात अन्तः निरीक्षण विधि में व्यक्ति स्वयं अंदर झाकता है तथा अपनी मनोदशा का स्वयं अध्ययन या निरीक्षण करता है – जैसे – किसी भी कविता

या कहानि को पढ़ने के बाद उसके सम्बन्ध में प्रतिक्रिया देना कि वह कैसी लगी? अन्तदर्शन विधि के द्वारा ही हम अपनी मनोदशा के अनुभव को बता पाते हैं।

(ii) गाथा वर्णन विधि :-

इस विधि में मनोवैज्ञानिक व्यक्ति को अपने पूर्व अनुभव को वर्णन करने को कहता है जिससे सुनकर वह उसका रिकार्ड तैयार किया जाता है, ततपश्चात् मनोवैज्ञानिक उस रिकार्ड का अध्ययन कर व्यक्ति के सम्बन्ध में निष्कर्ष निकालता है यह विधि एक आत्मनिष्ठ विधि है जो पूर्णरुप से व्यक्ति के पूर्व अनुभव पर आधारित होता है।

(B) वस्तुनिष्ठ विधियाँ :-

वस्तुनिष्ठ विधियाँ उन विधियों को कहा जाता है जिनमें व्यक्ति का व्यवहार का क्रमबद्ध अध्ययन किया जाता है इस निरीक्षण द्वारा बालक की रुचि, योग्यता, बुद्धि, चिंतन स्मरणशक्ति के अध्ययन द्वारा व्यक्ति के प्रकार आदि का अध्ययन किया जाता है अतः शिक्षा मनोविज्ञान में इस विधि का काफी प्रयोग किया जाता है।

(i) प्रयोगात्मक विधि :-

प्रयोगात्मक विधि एक वैज्ञानिक विधि है जिसमें प्रयोगकर्ता छात्रों के व्यवहारों को नियंत्रित वातावरण में अध्ययन करता है प्रयोगात्मक विधि में परीक्षण के लिए कोई समस्या ले ली जाती है उनका प्रयोगशाला परिस्थिति में निरीक्षण किया जाता है इस प्रकार नियंत्रित परिस्थिति में व्यक्ति की मानसिक क्रियाओं। जैसे - प्रत्यक्षीकरण, स्मृति, चिंतन विचार, अवधान, कल्पना आदि का नियंत्रित वातावरण में अध्ययन किया जाता है।

(ii) वस्तुनिष्ठ विधि :-

व्यक्ति बालक के व्यवहार का सूक्ष्म निरीक्षण करके उसके मानसिक दशा का अनुमान लगाना ही वस्तुनिष्ठ निरीक्षण विधि कहते हैं। इसे अवलोकन विधि भी कहा जाता है। इसमें परीक्षक अपने विषयी का अध्ययन करने में अपने पूर्व-अनुभव का लाभ उठाता है और बालक का मानसिक परिस्थिति का अनुमान लगा पाता है।

(3) विकासात्मक विधि :-

यह विधि मनोविज्ञान के अध्ययन के विवरणात्मक विधि है इस विधि के द्वारा व्यक्ति तथा समुह के क्रमिक विकास के अध्ययन के द्वारा विकास की विभिन्न अवस्थाओं विशिष्टताओ एवम् बालक के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जाता है।

(4) उपचारात्मक विधि :-

यह विधि बालक की समस्याओं का पता लगाकर उनके अनुसार, उपचार करने से संबंधित है विद्यालय में बहुत से बालक वैसे होते है जिनमें भाषा विकार, संवेगात्मक असंतुलन अधिगम संबधित समस्याएँ, समस्यात्मक, व्यवहार असामाजिक या अपराधी व्यवहार करने की प्रवृति होती है इस विधि के प्रयोग के द्वारा बालकों के समस्यात्मक व्यवहार या उपयुक्त समस्याओं के कारण का पता लगाकर उनका समाधान ढुढने के प्रयास किया जाता है।

(5) सांख्यिकी विधि :-

मनोवैज्ञानिक अध्ययन के एक प्रमुख विधि सांख्यिकी विधि है प्राप्त परिणामों को विश्वसनिय और वैध बनाने के लिए सांख्यिक पद्धति का प्रयोग किया जाता है शोध से प्राप्त परिणाम का सांख्यिकी पद्धतियों द्वारा विवेचन किया जाता है जिससे परिणाम अधिक वैज्ञानिक बन जाता है।

(6) तुलनात्मक विधि :-

इस विधि में व्यक्ति के व्यवहारों की समानताओ और असमानताओं की तुलना कर उनका अध्ययन किया जाता है। बहुत सारे शोधो का निष्कर्ष इस विधि पर आधारित होता है। वैज्ञानिक प्रयोगो ने कई बार पशुओ पर प्रयोग किया जाता है तथा उन्हें बालको से तुलना कर उनका सामान्तिकरण किया जाता है।

(7) मनोविश्लेषण विधि :-

इस विधि में बालक के अचेतन मन का अध्ययन करके उसका उपचार किया जाता है, व्यक्ति की बहुत सी दमीत ईच्छाएँ जिसे वह लोक-लाज तथा समाज के भय से पुरा नहीं कर पाता है वह उसके अचेतन मन में जाकर संग्रहित हो जाती है। मनोविश्लेषण व्यक्ति के व्यवहार की तह में जाकर उसके व्यवहार का विश्लेषण शब्द साहचर, स्वतंत्र, सम्मोहन आदि विधियों की सहायता से करता है, तत्पश्चात उसका कारण जान लेने पर उसका निदान निकाला जाता है।

⑧ साक्षात्कार विधि :-

साक्षात्कार विधि शिक्षा मनोविज्ञान की एक अत्यन्त विधि है इस विधि के द्वारा शिक्षा मनोविज्ञान छात्र की योग्यता, रुचि बुद्धि, चिंतन आदि का परीक्षण करते है। इसमें आमने-सामने की परिस्थिति में विषय-विशेषज्ञ द्वारा पुछे गए प्रश्नों के उत्तर प्रयोज्य को देना होता है इस प्रकार शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र में दो प्रकार का साक्षात्कार किया जाता है।

(A) संरचित साक्षात्कार (Structured Interview)

संरचित साक्षात्कार वह ~~है और~~ ~~न क्रम निश्चित होता है इसमें शिक्षक प्रश्न पुछने~~ साक्षात्कार है जिसमें पुछे जाने वाले प्रश्न पहले से निश्चित होता है उसका क्रम भी पहले से निश्चित होता है।

(B) असंरचित साक्षात्कार (Unstructured Interview

इसमें न तो प्रश्न निश्चित होता है और न क्रम निश्चित होता है इसमें शिक्षक प्रश्न पुछने के लिए स्वतंत्र होते है।

9 प्रश्नावली विधि :-

शिक्षा मनोविज्ञान के एक प्रमुख विधि है। इस विधि में प्रश्नो की एक लम्बी सूची तैयार की जाती है जिसे प्रश्नावली दे दी जाती है जिनमें प्रश्न तथा उसके उत्तर हाँ, नही या सही गलत में होते है बालक उन प्रश्नों को एक-एक करके पढ़ते है और अपने लिए जिस उत्तर श्रेणी को सही समझते है उस पर चिन्ह लगाते जाते है।

शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र में प्रयोग किए जानेवाले प्रश्नावली को दो विभिन्न भागो में विभाजित किया गया है।

(A) खुली प्रश्नावली :-

खुली प्रश्नावली के प्रश्नों के उत्तर प्रयोज्य स्वतंत्र रुप से देते है। जैसे - आप T.V क्यो देखते है)

(B) बंद प्रश्नावली :-

बंद प्रश्नावली में प्रश्नो का उत्तर दिए हुए उत्तरो में चुनकर देने होते है। जैसे - क्या आप घुमना पसंद करते है?

* ⑩ रेटिंग विधि :-

शिक्षा मनोविज्ञान में रेटिंग विधि का भी अधिक प्रयोग किया जाता है यह विधि रेटिंग स्केल के नाम से अधिक लोकप्रिय है) इस विधि में शिक्षा मनोविज्ञान बालक या बालको की व्यवहार की व्याख्या एक दिए हुए वर्ग मापनी (category scale) पर किसी

स्वभाविक परिस्थिति में जैसे वर्ग में या खेल मैदान में किसी बालक में शिष्टाचार संबंधित आदतों का प्रेक्षण करके मुख्य बिन्दु मापनी जैसे अत्यधिक सहमत स्वभाविक सहमत तटस्थ (Natural), असहमत (Disagree) तथा अत्यधिक असहमत (Strongly disagree) पर रेटिंग करता है। अर्थात् उसके शिष्टाचार संबंधी आदतों का एक तरह से श्रेणीकरण करता है। और निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचता है।

वैसा शिक्षामनोविज्ञान में मुख्यतः तीन तरह के रेटिंग का प्रयोग किया जाता है।

Ⓐ आंकिक रेटिंग विधि (Numerical Rating method)

Ⓑ आकृतिक रेटिंग विधि (graphic Rating method)

Ⓒ बाधिक चयन विधि (Froced choice Rating method)

Ⓐ आंकिक रेटिंग विधि :-

आंकिक रेटिंग विधि उसे कहा जाता है जिसमें शिक्षकों को जो observer या Rater का काम करते हैं। निश्चित अंकों का ये सभी अंक अच्छी तरह से परिभाषित होती है तथा शिक्षको बालक या शिक्षार्थियों को अपने समान्य अनुभव के आधार पर परिभाषाओं के अनुसार अंक का योग ज्ञात करके उनका सांख्यिक विश्लेषण (Statical Analaysis) का एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचते है जैसे

Question ① रमेश वर्ग में समय पर आता है।

सहमत 3, असहमत 2, तटस्थ 1

② रमेश गृह कार्य बनाकर वर्ग में आता है।

सहमत 3, असहमत 2, तटस्थ 1

③ रमेश में अनुशासन पालिका का गुण अधिक है।

सहमत 3, असहमत 2, तटस्थ 1

Ⓑ आकृतिक रेटिंग विधि :-

यह विधि आंकिक रेटिंग विधि के ही समान है अंतर सिर्फ इतना है कि आकृति रेटिंग में अपनी बिंदु का एक वर्णात्मक संकेत दिया रहता है यहाँ आंकिक रेटिंग विधि के समान मापनी बिन्दुओं का कोई संख्यात्मक मान नहीं दिया होता है। शिक्षक या शिक्षा मनोविज्ञान जो प्रेक्षण के रूप में कार्य

करते है शिक्षार्थी के प्रति अपने विचार दिए गए वर्णात्मक संकेत के ऊपर एक टिक या सही(✓) का निशान या कोई अन्य इसी प्रकार चिन्ह लगाकर करते है Ex- शिक्षक द्वारा कक्षा में प्रश्न पूछे जाने पर रमेश उसका उत्तर देता है अत्यधिक तेजी से, पूरी तेजी से धीमी गति से सुस्ती से, अत्यधिक सुस्ती से।

ⓒ बाधिक चयन विधि :—

इस विधि में प्रत्येक एकांक (Items) दो या दो से अधिक गुणों का सेट होता है। जिनमें से किसी एक को चुनकर शिक्षक किसी बालक का रेटिंग करते है, किसी एक एकांक के भीतर आने वाले सभी गुण समान रूप में अनुकूल या सामान्य रूप से प्रतिकूल दिखाई पड़ते है जिससे वह सही रेटिंग दे सके। Ex- रमेश अपने वर्ग में —

⇒ सबसे पहले बेन्च पर बैठता है।
⇒ किसी प्रश्न का उत्तर सबसे पहले देता है।
⇒ मानसिक स्वास्थ्य एवम् शारीरिक स्वास्थ्य पर ध्यान भरपुर देता है।

(11) व्यक्ति इतिहास विधि :—

व्यक्ति इतिहास विधि का प्रयोग व्यक्ति विशेष की किसी खास समस्याओं का समाधान ढुढ़ने के लिए किया जाता है बच्चे विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते है इनमें से कुछ बच्चें ऐसे होते है जो समाज विरोधी या समस्या व्यवहार करते है तथा शिक्षण कार्य को सुचारु से चलने नहीं देते है ऐसे बालक की समस्या का स्वरूप और कारण का पता लगाने के लिए उनका (case history) तैयार किया जाता है इसमें व्यक्ति के जन्म बिमारी शारीरिक वृद्धि, मानसिक और संवेगिक विकास, भाषा विकास, रुचियों आदतों एवम बुद्धि व्यवहार, पारिवारिक सम्बन्ध, सामाजिक वातावरण आदि से सम्बन्धित तथ्य एकत्रित करते है इन तथ्यों का विश्लेषण करके बालक के असमान व्यवहार का कारण तथा निदान ढुढ़ा जाता है।

(12) कोटी विधि :—

यह विधि बालकों के कुछ विशेष शीलगुण का पता लगाने हेतु प्रयुक्त होती है। कोटी विधि में परीक्षण प्राप्त उत्तरों के आधार पर उच्च कोटी से भिन्न कोटी के क्रम में श्रेणी बनाते है। कोटी अंतर विधि द्वारा दो विषयों अथवा छात्रों के मध्य

का अंतर अथवा सह-सम्बन्ध ज्ञात किया जाता है। यह विधि विश्वसनीय तथा वैध मानी जाती है क्योंकि इसमें सांख्यिकी गणना की जाती है।

* Type of Teaching *

भूमिका :—

शिक्षण एक जटील प्रक्रिया है जो किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए की जाती है समान्यतः इसका उद्देश्य विद्यार्थियो के व्यवहारो में वंछित परिवर्तन उत्पन्न करता है व्यवहार परिवर्तन के लिए शिक्षण की प्रक्रिया मे विद्यार्थियों को अधिगम अनुभव दिए जाते है अधिगम अनुभव सधारणतः किसी पाठ्यपुस्तक या प्रकरण से संबंधित होते है एकही पाठ्यवस्तु को विद्यालय में विभिन्न स्तरो पर पढ़ाया जाता है क्योकि पाठ्यवस्तु का अपना एक स्वरूप होता है जिससे शिक्षण की विभिन्न उद्देश्यों की प्राप्ति की जाती है इस प्रकार अधिगम के विभिन्न स्तरों को प्रभावित किया जाता है यह ध्यान देने की बात है कि किसी भी पाठ्यवस्तु को शिक्षक (विचार-धीन) स्थिति से लेकर विचारपूर्ण स्थिति तक विस्तृत कर सकता है। अर्थात् शिक्षण के ज्ञान उद्देश्य से मुल्यांकन तथ्य की प्राप्ति की जाती है।

इस प्रकर शिक्षण प्रशिक्षण लेकर अनुदेशन तक सतत प्रक्रिया मानी जाती है विभिन्न विद्वानों ने शिक्षण को विभिन्न आधारों पर विभिन्न प्रकार से वर्गीकृत किया है ये वर्गीकरण नीचे प्रस्तुत किए जा रहे है। जिनमें मुख्य रूप से शिक्षण के स्तरो को जानना जरूरी है।

(A) शिक्षण के उद्देश्य के आधार पर :—

शिक्षण के उद्देश्यों के आधार पर शिक्षण को तीन प्रमुख भागो मे वर्गीकृत किया जाता है।

(अ) ज्ञानात्मक शिक्षण।
(ब) भावात्मक शिक्षण।
(स) मनोगत्यात्मक शिक्षण।

(B) शिक्षण के स्तरों के आधार पर :—

शिक्षण के स्तरों के आधारपर शिक्षण को तीन भागो में बाँटा गया है।

(अ) - स्मृति स्तर।
(ब) बोध स्तर।
(स) चिन्तन स्तर।

© शासन प्रणाली के आधार पर :-

शिक्षण को शासन प्रणाली के आधार पर शिक्षण को तीन भागो में विभाजित किया जाता है।

(अ) एकतंत्रीय शिक्षण
(ब) लोकतंत्रीय शिक्षण
(स) हस्तक्षेप रहित शिक्षण

इस प्रकार के शिक्षण मे शिक्षक एक मित्र के रूप में कार्य करता है और छात्रो को और अधिक सक्रिय बनाता है।

③ शिक्षण के स्वरूप के आधार पर :-

शिक्षण के स्वरूप के आधार पर शिक्षण समान्यत: तीन वर्गो में विभक्त किया जाता है।

(अ) वर्णात्मक शिक्षण।
(ब) निदानात्मक शिक्षण।
(स) उपचारात्मक शिक्षण।

(E) शैक्षिक क्रियाओं के आधार पर :-

शिक्षण के विभिन्न क्रियाओं के आधार पर शिक्षण को निम्नलिखित तीन पदो में विभाजित कर सकते है।

(अ) प्रस्तुतीकरण।
(ब) प्रदर्शन।
(स) कार्यकलाप।

* शिक्षण के स्तरो के आधार पर :-

शिक्षण के स्तरो के आधार शिक्षण को तीन भागों में विभाजित किया जाता है।

(A) स्मृति स्तर।
(B) अवबोध स्तर।
(C) परावर्तन स्तर।

(A) स्मृति स्तर :- यह शिक्षण के स्तर का प्रथम अवस्था है स्मृति स्तर विचारहीन प्रक्रिया होती है इसमें तथ्यों एवम् सूचनाओं को याद करना मुख्य लक्ष्य होता है। इस स्तर पर अध्यापक का उद्देश्य छात्रों की स्मृति का विकास करना होता है वह स्मृति के आवश्यक तत्वों अधिगम, धारण प्रत्यास्मरण और अभिज्ञान के विकास के लिए विभिन्न रीतियों या विधियो का प्रयोग करता

(B) अवबोध स्तर :- अवबोध स्तर शिक्षण स्मृति से शिक्षण की आगे की अवस्था है। इस स्तर के शिक्षण के लिए आवश्यक है कि पहले स्मृति स्तर का शिक्षण हो चुका हो। इसमें विद्यार्थी को पृथक-पृथक तथ्यों एवम् उनके समान्यीकृत स्वरूप के मध्य सम्बन्ध देखने के प्रति उत्प्रेरित किया जाता है।

दूसरे शब्दों में इसमें स्मृति तथा अन्तरहित दोनों सम्मिलत होते है। बोध स्तर का शिक्षण करते समय शिक्षक तथा विद्यार्थी दोनो पाठ के विकास मे सक्रिय रूप से भाग लेते है।

(C) परावर्तन स्तर :-

शिक्षण का तीसरा और अंतिम स्तर परावर्तन स्तर है। यह प्रथम दो स्तरों से अधिक महत्वपूर्ण है। यह प्रथम दो स्तरों से अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें स्मृति तथा अवबोध दोनो सम्मिलत होते है।

परावर्तन स्तर समस्या केन्द्रित अनुदेशन सम्पन्न होती है इस स्तर की शिक्षण परिस्थिति में विद्यार्थी पूर्ण तन-मन के साथ एकप्रत होकर किसी समस्या के समाधान हेतु लग जाते है वो परम्परागत ढंग से न सोचकर कल्पनात्मक एवम् सृजनात्मक चिंतन का सहारा लेते हुए विभिन्न परिस्थितियों का समाधान कर लेते है।

** स्मृति स्तर के शिक्षण का स्वरूप :-

शिक्षण का प्रथम स्तर पर विचार हीनता पायी जाती है इस स्तर पर ऐसी अधिगम परिस्थिति विकसित की जाती है जिनसे छात्र पढ़ाई गई पाठ्यवस्तु को सरलता से कण्ठस्थ कर सके। विषयवस्तु को कण्ठस्थ करलेने से ही मात्र शिक्षण की सफलता सिद्ध हो जाती है।

स्मृति स्तर रटने का स्तर है इस स्तर के शिक्षण में विद्यार्थी के मस्तिष्क में ज्ञानात्मक स्तर पर तथ्यों एवम् सूचनाओं को बल पूर्वक ठुसा जाता है। इसमें केवल विषय की रटने की प्रवृति किया जाता है। मानसिक रूप से पिछड़े बालक को वस्तु को सरलतम से याद कर लेता है विद्यार्थियों बलपूर्वक धारण किए गए ज्ञान की आवश्यकता पड़ने पर प्रत्यास्मरण तथा पहचान करते है।

* स्मृति शिक्षण के प्रतिमान :-

हरबर्ट ने स्मृत स्तर के शिक्षण का प्रवर्तक माना जाता है उन्होंने स्मृति स्तर के शिक्षण का एक प्रतिमान प्रस्तुत करते हुए इसके प्रारूप का वर्णन किया है जिसका संक्षिप्त रूप निम्नलिखित सारणी में प्रदर्शित है।

प्रतिमान पक्ष	स्मृति स्तर पर शिक्षण
① उद्देश्य (Focus)	छात्रों में निम्नलिखित क्षमता विकसित करना। Ⓐ मानसिक पक्षों का प्रशिक्षण। Ⓑ तथ्यों का ज्ञान प्रदान करना। Ⓒ सीखे हुए तथ्यों को याद करना। Ⓓ सीखे हुए तथ्यों का प्रत्यास्मरण करना।
② संरचना (Syntax)	स्मृति स्तर की शिक्षण की व्याख्या को निम्नलिखित पाँच सोपानों में बाँटा गया है। जिसे हरबर्ट के पंच पद प्रणाली भी कहा जाता है। Ⓐ प्रस्तावना। Ⓑ प्रस्तुतीकरण। Ⓒ श्रव्य-दृश्य कौशल। Ⓓ श्याम पट्ट कौशल। Ⓔ गृह कार्य / कक्षा कार्य।
③ सामाजिक प्रणाली	Ⓐ कक्षा में केवल शिक्षक ही सक्रियतथा प्रमुख होता है। Ⓑ वह छात्रों के सामने पाठ्यक्रम प्रस्तुत करता है उनकी क्रियाओं को नियंत्रित करता है और प्रेरणा प्रदान करता है। Ⓒ छात्रों का स्थान गौण रहता है। Ⓓ छात्र चुप-चाप शिक्षक को आदेश मानते हुए उसका अनुसरण करते है।
④ मूल्यांकन प्रणाली	① मूल्यांकन लिखित और अलिखित दोनो प्रकार से होता है। ② परीक्षा में रटने की क्षमता पर जोड़ दिया जाता है।

* स्मृति की शिक्षण की कमीयाँ / आलोचना :—

इसकी मुख्य कमीया इस प्रकार है।

⇒ स्मृति स्तर पर शिक्षण की प्रक्रिया एक अमनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है। क्योंकि यह विद्यार्थियों की स्वतंत्रता रुचियों, रुझानों, क्षमताओं कल्पना तथा योग्यताओं, गला घोंट कर केवल बलपूर्वक रटने पर बल देती है।

⇒ स्मृति स्तर पर तथ्य काफी रटे हुए होते है अतः भूलने की प्रक्रिया भी इसमें काफी सक्रिय रहती है।

⇒ इस स्तर पर सोचने और तर्क करने के लिए कोई स्थान नहीं होता।

⇒ इस स्तर के शिक्षण में अध्यापक और विषय वस्तु को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है छात्रों एवम् उनके अनुभवों को नहीं।

⇒ इसमें शिक्षक और छात्र के बीच कोई अंतःक्रिया नहीं होती केवल अध्यापक ही सक्रिय होता है और छात्र निष्क्रिय।

⇒ इसमें कक्षा कार्य यांत्रिक ढंग से चलता रहता है और उसका वातावरण काफी औपचारिक होता है तथा छात्र को किसी प्रकार की प्रेरणा नहीं मिल पाती।

⇒ इसमें छात्र रटु तोता तो अवश्य बन जाते है परंतु बुद्धिमान ज्ञान नहीं।

⇒ स्मृति स्तर पर किया गया शिक्षण छात्रों के व्यक्तित्व पर महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं डालता। अधिगम का प्रभाव बहुत ही सतही और कुछ ही समय तक ठहरने वाला होता है।

⇒ इस प्रकार के शिक्षण में छात्रों के मन और मस्तिष्क पर बहुत बोझ पड़ता है और इसकी वजह से समुचित अधिगम और उसके मस्तिष्क विकास में बाधा आती है।

* सुझाव :-

स्मृति स्तर के शिक्षण को अधिक उपयोगी और प्रभावशाली बनाने के लिए निम्नलिखित सुझाव है। —

⇒ पाठ्यवस्तु सार्थक और अर्थपूर्ण होनी चाहिए।
⇒ पाठ्यवस्तु को क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करना चाहिए।
⇒ शिक्षण में समग्र पद्धति कर ही प्रयोग करना चाहिए।
⇒ जब विद्यार्थी थके हो तो शिक्षण नहीं करानी चाहिए।
⇒ सुनिश्चित पुनर्बलन प्रणाली का प्रयोग करना चाहिए।
⇒ प्रत्यास्मरण की वृद्धि, अभ्यास के द्वारा ही जानी चाहिए।
⇒ पुनरावृति एक लय में की जानी चाहिए।
⇒ शिक्षण को चाहिए कि वह केवल ज्ञान उद्देश्य को प्राप्त करने का प्रयास करे।

* अवबोधन (Understanding) :-

अवबोधन स्तर को व्याख्यात्म अवबोधन का भी स्तर कहा जाता है।

* अवबोधन का अर्थ (meaning of understanding)

अवबोध का अर्थ है ग्रहण करना, विचार को ग्रहण करना; समझना, किसी वस्तु के पूर्व परिचित होना, किसी वस्तु की विशेषता अथवा प्रकृति से परिचित होना, भाषा में किसी शब्द का अर्थ प्रयुक्त संदर्भ में समझना किसी तथ्य को स्पष्ट रूप से जानना तथा ग्रहण करना।

इस प्रकार जब व्यक्ति किसी परिस्थिति में उपलब्ध विधित अंशों को सम्बन्धित कर उनकी व्याख्यात्मक टिप्पणी कर लेता है तो उसे उसका अवबोध कहा जाता है। अवबोध उत्पन्न हो जाने पर व्यक्ति एक तथ्य को दूसरे तथ्यों से जुड़ने लग जाता है और उनका प्रयोग उच्च स्तरीय विवेचन या व्याख्या के लिए करता है। अवबोध स्तर का शिक्षण वह प्रक्रिया है जिसमें छात्रों का समान्वीकरण सिद्धान्तों तथा तथ्यों के संबंध में अवबोध कराया जाता है। अवबोध के द्वारा अन्तर्दृष्टि उत्पन्न होती है तथा बौद्धिक व्यवहारों को बढ़ावा मिलती है अवबोध स्तर पर शिक्षण को प्रभावशाली ढंग से सम्पादित करने की दिशा में हरबर्ट, जुई, मॉरिसन और ब्रुनर ने महत्वपूर्ण कार्य कर प्रतिमाण दिए जो निम्नलिखित सारणी में प्रदर्शित है —

* अवबोधन स्तर के शिक्षण की अवहेलना :—

मॉरिसन ने बोध स्तर के शिक्षण का जो प्रतिमान दिया है उसकी सीमाएँ तथा विशेषता निम्नलिखित है।

⇒ इसकी प्रमुख सीमा यह है कि इसमें मानव व्यवहार नैपुण्य पर ही ध्यान दिया जाता है।

⇒ मॉरिसन ने शिक्षक की विषयवस्तु में तल्लीनता को भी विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा माना है जबकि मनोवैज्ञानिक प्रेरणा इससे कहीं अधिक प्रभावशाली सिद्ध हो सकती है।

⇒ चूँकि शिक्षक में पाठ्यक्रम के नैपुण्य पर ही अधिक बल दिया जाता है। जिसके द्वारा ~~किया हुआ~~ बालकों के ज्ञानात्मक पक्ष का भी विकास होता है।

⇒ मॉरिसन द्वारा दिया हुआ शिक्षण का यह प्रतिमान मनोवैज्ञानिक तथा व्यवहारिक दृष्टि से प्रभावात्मक प्रतिमान माना जाता है।

* अवबोधन स्तर के शिक्षक के लिए सुझाव :—

अवबोधन स्तर के शिक्षक को प्रभावशाली बनाने के लिए मॉरिसन ने निम्नलिखित सुझाव दिया है।

⇒ विद्यार्थियों को अवबोध स्तर के शिक्षण में उस समय प्रवेश दिया जाय जब वे पहले स्मृति स्तर के शिक्षण की परीक्षा में सफल हो जाय।

⇒ अवबोध ~~स्तर के प्रत्येक सोपान का अनुसरण क्रमबद्ध रूप से समुचित ढंग से किया जाना चाहिए।~~

⇒ अवबोध स्तर के विभिन्न सोपान की परीक्षाओं में सफल होने पर ही अगले सोपान में प्रविष्ट किया जाये।

⇒ उदाहरण → स्वरूप प्रस्तुतीकरण की परीक्षा में सफल होने पर ही आत्मिकरण कलान्स में प्रवेश की अनुमति दी जाए।

⇒ शिक्षक को पाठ्यक्रम में तल्लीन होने के साथ-साथ छात्रों को मनोवैज्ञानिक ढंग से अभिप्रेरणा भी देनी चाहिए, साथ ही उसे छात्रों के आकांक्षा स्तर को भी उठाने का प्रयास करना चाहिए।

* चिंतन / परावर्तन स्तर पर शिक्षण :- (Reflective of Teaching)

चिंतन मानव के विकास का महत्वपूर्ण पद है। इस स्तर पर शिक्षक अपने छात्र में चिंतन तर्क तथा कल्पनाशक्ति को बढ़ाता है। ताकि बाद में वे छात्र उन उपायों के माध्यम से अपनी समस्याओं का समाधान कर सके। इस स्तर पर शिक्षण में स्मृति तथा बोध दोनों स्तरों का शिक्षण निहित सकल नहीं हो सकता है। उदाहरण के तौर पर चिंतन स्तर पर शिक्षण समस्या केन्द्रित होती है शिक्षण छात्रों के सामने कोई सम्बन्धित ज्वलनता समस्या प्रस्तुत करता है जिसपर छात्र सक्रिय और अभिप्रेरित होकर स्वयं चिंतन प्रारंभ कर देता है।

इस स्तर पर छात्र स्वयंरुचि लेकर स्वेच्छा से चिंतन, मनन, तर्क और कल्पना करते हुए समस्या समाधान खोजते है और स्वयं को अधिक आत्मविश्वास वाला क्रियाशील तथा सक्रिय छात्र बनते है इस स्तर के शिक्षणार्थ शिक्षको को योग्य अनुभवी विषय तथा क्रिया विशेषज्ञ तथा प्रभावशाली होना चाहिए।

* परावर्तन / चिंतन स्तर में शिक्षण का प्रतिमान :—

दृष्टि द्वारा प्रतिपादित चिंतन स्तर के शिक्षण के प्रतिमान का वितरण सारणी के माध्यम से दिया जा रहा है।

प्रतिमान पक्ष	चिन्तन स्तर पर शिक्षण प्रतिमान
① उद्देश्य (Focus)	① छात्रों में मौलिक और स्वतंत्र चिंतन शक्ति का विकास करना। ② छात्रों में समस्या समाधान हेतु आलोचनात्मक तथा सृजनात्मक चिंतन शक्ति का विकास करना
② संरचना	समस्या की प्रकृति पर आधारित रहती है यह व्यक्तिगत तथा सामाजिक दोनो तरह की हो सकती है इसके चार सोपान है। ① छात्र के सामने समस्या परिस्थिति उत्पन्न करना। ② छात्र द्वारा उपकल्पना का निर्माण करना। ③ उपकल्पना पूर्ति के लिए सत्य चिन्तन मनन

	का प्रयोग करना। ④ उपकल्पना का परीक्षण तथा समस्या समाधान NOTE-① उपकल्पना = परिकल्पना (HYPOTHESIS) HYPO – सम्भावित + THESIS – समस्या का समाधान। NOTE-② जब किसी सम्भावित समस्याओं प्रदत्तों तथा प्रमाणों के आधार पर पुष्टि की जाती है तब उसे परिकल्पना या उपकल्पना कहते हैं।
③ सामाजिक प्रणाली	① कक्षा का वातावरण पूर्णरूप से खुला और स्वतंत्र होता है। ② छात्र क्रियाशील और स्वप्रेरित होते है। ③ सहयोग, सामाजिक, संवेदनशीलता सहानुभूति का वातावरण रहता है।
④ मूल्यांकन प्रणाली	① निबन्धनात्मक मूल्यांकन अधिक उपयोगी है। अभिवृत्ति समस्या समाधान सृजनात्मक आदि की परीक्षण उपादेय है।

* चिंतन स्तर के शिक्षण दोष :–

चिंतन स्तर शिक्षण अधिगम का महत्वपूर्ण स्थल माना जाता है फिर भी इस स्तर की शिक्षा की कुछ दोष निम्न है।

⇒ चिंतन स्तर में स्मृति तथा बोध स्तर के शिक्षण की भांति निश्चित कार्यक्रम का अनुकरण नहीं किया जाता है।

⇒ इस स्तर के शिक्षण की उपयोगिता केवल उच्च कक्षाओं के लिए ही है। छोटी कक्षाओं के लिए यह अनुपयोगी है।

⇒ शिक्षण का स्वरूप सदैव समस्या केन्द्रित होता है समस्या नहीं हो तो शिक्षण नहीं है शिक्षण सदैव समस्या केन्द्रित नही होता है।

⇒ इस स्तर पे शिक्षण में वाद-विवाद को ही अधिक महत्व दिया जाता है जो ठीक नहीं है। क्योंकि सभी प्रकार की पाठ वस्तु के शिक्षण में वाद-विवाद का प्रयोग नही किया जा सकता है।

⇒ इस शिक्षण स्तर पर शिक्षक विद्यार्थी का सम्बन्ध समानता के स्तर पर देखा जाता है। जो ठीक नहीं है, समझ लेना आवश्यक है।

H.C ..... के अनुसार - " शिक्षा या अधिगम या शिक्षण अधिगम के सिद्धान्तो का किसी व्यवहार की प्राप्ति के लिए किसी पारूप के अनुसार दी जाने वाली प्रक्रिया प्रतिमान कहलाती है।"

इस प्रकार प्रतिमान का अर्थ है किसी अभुरव उद्देश्य के अनुसार व्यवहार में परिवर्तन लाने की प्रक्रिया है।

परिभाषा (Definition) :—

शिक्षण प्रतिमान इस स्वरूप को स्पष्ट करने वाली कुछ परिभाषा निम्नलिखित है।

हायनन् के अनुसार :—"शिक्षण प्रतिमान शिक्षण के बारे में सोचने विचारने की एक रीति है जो वस्तु के अंतरनिहित गुणों को परखने के लिए आधार प्रदान करती है।"

बी० आर० जायसी के अनुसार " शिक्षण प्रतिमान अभिकल्प के समान है ये छात्र की अंतःक्रिया द्वारा उसके व्यवहार में विशिष्ट परिवर्तन लाने के लिए विशेष परिस्थिति की दशाओं का उल्लेख और प्रस्तुतीकरण करते है।"

भटनागर के अनुसार - " शिक्षण प्रतिमान को अधिगम उद्देश्यों वातावरण संबंधी दक्षताओं और अन्य प्रक्रियाओं का सम्मिलत रूप कहा जाता है।

उपयुक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शिक्षण प्रतिमान रूप जैसा प्रारूप या ऐसी योजना है। जिसका प्रयोग पाठ्यचर्या या पाठ्यक्रम की रचना करते समय शिक्षण सहायक समाग्रीयों का चयन करने और दैनिक उद्देश्यों के संदर्भ में शिक्षक के कार्यों में मार्गदर्शन करने आदि में किया जा सकता है शिक्षण प्रतिमान अनुभव एवम् प्रयोगों के निष्कर्ष कहे जाते है। इसके पारूप में निम्नलिखित सम्मिलत रहती है।

⇒ परिवर्तन व्यवहार को पदिवारिक रूप प्रदान करना।
⇒ सही तथा समुचित उद्दीपनों का चयन करना। जिससे छात्र वंछित अनुक्रिया कर सके।
⇒ परिस्थितियों का विश्लेषीकरण करना।
⇒ मानव व्यवहार का मूल्यांकन के मापदण्ड निर्धारित करना।